एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

तारामीरा की उन्नत वैज्ञानिक खेती

(*नीलम शेखावत[1], विजय सिंह मीणा[1], करतार सिंह[1], धर्मेन्द्र कुमार जंघेल[2], विजय कुमार कुशवाहा[3], सत्येन्द्र[3] एवं हिमांशु पाण्डेय[4])

[1]भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर-342005 (राज.)

[2]आनुवंशिकी और पादप प्रजनन विभाग, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

[3] आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

[4]भा.कृ.अनु.प. - भारतीय गन्ना अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

* neelam.shekhawat@icar.gov.in

तारामिरा *(एरुका सैटिवा* मिल), रेपसीड–सरसोंसमूह की एक महत्वपूर्ण तिलहन फसल है। जिसको मुख्यतय सिमित सिंचाई तथा बारानी अथवा कम उर्वरता वाली भूमि दोनों पर उगाया जा सकता है। तिलहन फसल होने के बावजूद भी इसको हमेशा मामूली महत्व दिया जाता है परन्तु पानी की कमी तथा सूखा जैसी प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों में इस फसल को अधिक उगाया जाता है क्योंकि इसमें सूखा सहिष्णु प्रकृति अधिक होती है। मुख्य रूप से यह राजस्थान की ही फसल है जहाँ की जमीन बंजर है। धीरे–धीरे पंजाब में भी इस फसल को उगाना शुरु किया गया है जिससे जमीन में उर्वरक शक्ति में वृद्धि हुई है। राजस्थान के श्री गंगानगर, हनुमानगढ़ व नागौर में इसका सबसे ज्यादा उत्पादन होता है। इसके अलावा जोधपुर, बाड़मेर, पाली, जैसलमेर, बीकानेर तथा जयपुर जिलों में भी तारामीरा की खेती की जाती है। तारामीरा के पत्तों की भुर्जी बनाकर तथा सलाद के रूप में खाया जाता है। इसमें विटामिन–ए, विटामिन–सी और पोटेशियम प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह हड्डियों को मजबूत, आखों की रोशनी तेज व पाचन तंत्र को मजबूत करता है। इसमें तेल की मात्रा लगभग 35 से 37 प्रतिशत पायी जाती है। तेलको खाद्य के रूप में प्रयोग करने से यह स्किन कैंसर, लंग कैंसर, मुहं के कैंसर के प्रभाव को कम करता है। तारामीरा में विटामिन बी भी होता है जो मेटाबोलिज्म को बढ़ाता है।

मौसम एवं जलवायु: तारामीरा रबी मौसम की फसल है। इसको बढ़वार के समय शुष्क, ठंडे व साफ मौसम की आवश्यकता होती है। अधिक तेल उत्पादन के लिए कम तापमान, ठंडा मौसम तथा पर्याप्त मृदा नमी की आवश्यकता होती है। अधिक वर्षा वाले स्थान इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं है।

खेत की तैयारी: तारामीरा की खेती वैसे तो हर तरह की मिट्टी में की जा सकती है परन्तु हल्की बलुई दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिए अच्छी मानी गयी है। अधिक अम्लीय या क्षारीय भूमि इसकी खेती के लिए अनुपयुक्त होती है। खेत की 2 से 3 बार जुताई कर भूमिको 10–15 से.मी. गहराई तक भुरभुरी करलेना चाहिए। दीमक तथा जमीन के अन्य कीड़ों की रोकथाम हेतु बुवाई से पहले क्युनोलफोस 1.5 प्रतिशतचूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में देकर फिर ही जुताई करनी चाहिए।

बीजदर व बुवाई का समय: बीज की मात्रा एक हेक्टेयर के लिए करीब 5 किलोग्रामबीज की आवश्यकता होती है। अच्छे उत्पादन के लिए बुवाई से पहले 2.5 ग्राम मेन्कोजेब प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करना चाहिए। अक्टूबर माह के पहले सप्ताह से नवम्बर माह तक इसकी बुवाई की जाती है।

तारामीरा की उन्नतकिस्में: अच्छे उत्पादन के लिए उन्नत किस्मों का चयन करना जरुरी है।

क्रं सं	उन्नतकिस्में	विशेषताएँ
1	आर. एम. टी. –314	बारानी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है जो 12–15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत उपज तथा 130–140 की परिपक्वता अवधि की किस्म है। फैली हुई शाखाएं तथा 3.5 ग्राम 1000 दानों का वजन इस किस्म की विशेषताएं है
2	टी–27	सूखे के प्रति सहनशील, बारानी क्षेत्रों के लिये उपयुक्त इस किस्म की औसत उपज 6.5 क्वंटल प्रति हेक्टेयर होती है. पकाव अवधि 150 दिन एवं तेल की मात्रा 36 प्रतिशत होती है।
3	आई. टी. एस. ए.	सूखा सहनशील बारानी क्षेत्रों के लिये उपयुक्त इस किस्म की पकाव अवधि 150 दिन एवं औसत उपज 6.5 क्वंटल प्रति हेक्टेयर होती है. इसमें तेल की मात्रा 35 से 36 प्रतिशत होती है।
4	क्रन तारा	बारानी क्षेत्रों के लिये उपयुक्त 90 से 100 सेन्टी मीटर ऊँची इस किस्म की शाखाऐं फैली हुई होती है। इसके 1000 दानों का वजन 3 से 5 ग्राम एवं तेल की मात्रा 36.9 प्रतिशत होती है. 130 से 140 दिन में पक कर यह 12 से 15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है।
5	वल्लभ तारामिरा1	परिपक्वता अवधि 130 से 135 दिन में पक कर यह 6 से 11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। तेल की मात्रा 38 से 40 प्रतिशत होती है। इसके 1000 दानों का वजन 3.8 ग्राम
7	ज्वालातारा	परिपक्वता अवधि 133 से 145 दिन में पक कर यह 12 से 16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। तेल की मात्रा 38.90 प्रतिशत होती है। इसके 1000 दानों का वजन 3.80 ग्राम
8	जेबनेरतारा	परिपक्वता अवधि 137 से 142 दिन में पक कर यह 13 से 15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। तेल की मात्रा 39.70 प्रतिशत होती है। इसके 1000 दानों का वजन 3.80 ग्राम

बुवाई: बारानी क्षेत्र में तारामीरा की बुवाई का समय मिट्टी की नमी व तापमान पर निर्भर करता है। नमी की उपलब्धता के आधार पर इसकी बुवाई सितम्बर के मध्य से अक्टूबर अंत तक कर सकते है। कतार से कतार की दूरी 40–45 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। कतारों में 5 सेंटीमीटर गहरा बीज बोना चाहिए।

पोषकतत्त्व एवंउर्वरक: तारामीरा के अच्छे विकास के लिए खेत तैयारी के समय गोबर की खाद और बुवाई के समय फसल में 30 किलोग्राम नाइट्रोजन एवं 15 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हेक्टेयर देना चाहिये। अंतिम जुताई के समय 250 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में मिलाना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण तथा सिंचाई: खरपतवार की रोकथाम के लिए समय–समय पर आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करना चाहिए। खरपतवार नियंत्रण के लिए बुवाई के 20 से 25 दिन बाद पहली निराई करें। तारामीरा में प्रथम सिंचाई 40–50 दिन में फूल आने से पहले तथा आवश्यकता पड़ने पर दूसरी सिंचाई दाना बनते समय करनी चाहिए।

रोग प्रबंधन: इस फसल को कोई ज्यादा बीमारी नहीं लगती है। इसमें ज्यादातर सफेद रोली या झुलसा बीमारी ही लगती है। मोयलाकीट की रोकथाम के लिए मिथाइल पैराथियोंन 2 : या मेलाथियोंन 5 : चूर्ण

25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से फसल पर भुरकाव करना चाहिए। सफेद रोली अथवा झुलसा रोग के लक्षण दिखाई देते ही 1.5 किलोग्राम मेन्कोजेबका घोल बना कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करना चाहिए। प्रकोप ज्यादा होने पर छिडकाव को निश्चित अंतराल पर दोहराया भी जा सकता है।

फसल की कटाई: फसल के जब पत्ते तथा फलियाँ पीले पड़ने लग जायें एवं पत्तेझ ड़नेलग ेंतो फसल की कटाई कर लेनी चाहिए।

उत्पादन: उपरोक्त वैज्ञानिक तकनीक और अनुकूल स्थितियों में 12–15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पैदावार तारामीरा की फसल में प्राप्त हो सकती है।